नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो. 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक : 29-08-2017

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़ गोरखपुर के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित विशिष्ट व्याख्यान के मुख्य वक्ता प्रो0 अनन्त मिश्र पूर्व विभागाध्यक्ष 'हिन्दी विभाग' दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर ने ''हिन्दी साहित्य में पाठकों की समस्या'' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज समाज में स्रोताओं की संख्या कम हो रही है। हर कोई बोलना ही चाहता है। वेद का एक नाम श्रुति है व्यास जी ने अपने समय में सुनने की समस्या पर चिंता जतायें थे। सुनने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। साहित्यकार चलती हुई भाषा के विरूद्ध होता है या यूँ कहें कि बाजार के विरूद्ध होता है। वह समाज के सत्य को लिखता हैं, और सत्य से सरोकार के लिए साहित्य को जब समाज पढ़ता है तो उसके संवेदना का परिष्कार होता है समाज पर बाजार का कब्जा है। इसलिए समाज में झूठ की भाषा चलती है।

साहित्य पढ़ना सत्य का सामना करना है साहित्यकार सत्य की कमाई लिखता है। अपने वक्तव्य में मुख्य वक्ता ने यह भी कहा कि आज का युवा ज्ञानतंत्र को झोले में लटकायें हुयें चला जा रहा है। साहित्यकार समाज की समस्याओं का साझा करता है। संवेदना से युक्त साहित्य पढ़ने की किसी के पास फुरसत नहीं है। आज किसी को किताबों को पढ़ने की फुरसत नहीं है। सब लोग सूचनात्मक ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। उन्होने कहा कि पूरी दुनिया से पढ़ने कि प्रवृत्ति का निषेध हो रहा है, कौन लम्बा सफर तय करें? आज इन्टरनेट जैसे संसाधनो ने ज्ञान का संक्षिप्तीकरण कर दिया है। चेतन मनुष्य अचेतन पदार्थो को प्राप्त करने की होड़ में है। साहित्य पढ़ने से आत्मा का परिष्कार होता है, संवेदना का विकास होता है। आदमी में मनुष्यता का विकास होता है। पाठक की समस्या नही, जीवन दृष्टि की समस्या है।

कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन हिन्दी विभाग की प्रभारी डॉ0 आरती सिंह ने किया। कार्यक्रम में हिन्दी विभाग के सभी छात्र–छात्रायें उपस्थित रहें।

प्रकाश

(श्री प्रकाश प्रियदर्शी)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी